CBSE Test Paper 04

Ch-2 बालगोबिन भगत

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   'बालगोबिन भगत' मॅझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गए थे। लम्बी दाढ़ी या जटाजूट तो नहीं रखते थे, किन्तु हमेशा उनका चेहरा सफेद बालों से ही जगमग किए रहता। कपड़े बिलकुल कम पहनते। कमर में एक लंगोटी-मात्र और सिर में कबीरपंथियों की-सी कनफटी टोपी। जब जाड़ा आता, एक काली कमली ऊपर से ओढ़े रहते। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन, जो नाक के एक छोर से ही, औरतों के टीके की तरह शुरू होता। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

   i. बालगोबिन भगत की आयु कितनी थी?
   ii. 'उनका चेहरा सफेद बालों से ही जगमग किए रहता'-से लेखक का क्या आशय है?
   iii. बालगोबिन कौन थे, वह कैसे वस्त्र पहनते थे?

2. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

3. बालगोबिन भगत की पुत्र-वधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

4. गर्मियों की उमस भरी शाम को बालगोबिन भगत किस प्रकार शीतल कर देते थे?

5. मोह और प्रेम में अन्तर होता है। बालगोबिन भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन को सत्य सिद्ध करेंगे?

6. आपकी दृष्टि से भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

CBSE Test Paper 04

Ch-2 बालगोबिन भगत

Answer

1. i. बालगोबिन भगत की आयु साठ वर्ष से अधिक थी ।
   ii. इस पंक्ति में लेखक ने बताया है कि बालगोबिन भगत के बाल सफेद हो गए थे। वह साधुओं जैसे लम्बे बाल तो नहीं रखते थे किन्तु उनके सफेद बाल उनके चेहरे की आभा को बढ़ाते थे जिसके कारण उनका मुख अत्यन्त प्रभावशाली लगता था।
   iii. बालगोबिन मझोले कद के अत्यन्त गोरे चिट्टे ईश्वर-भक्ति में विश्वास रखने वाले आदमी थे। वह केवल एक लँगोटी और सर में कबीरपंथियों जैसी कंफती टोपी तथा गले में तुलसी के जड़ों की माला पहनते थे। सर्दियों में शरीर पर एक छोटा-हल्का काले रंग का कम्बल ओढ़ लेते थे।

2. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए थी क्योंकि वे सुबह उठकर दो मील दूर नदी में स्नान करने जाते थे | किसी भी मौसम का कोई भी असर उन्हें रोक नहीं पाता था | दोनों समय ईश्वर के गीत गाना, ईश्वर की साधना में लगे होते हुए भी गृहस्थी के कार्यों से वे कभी भी विरत नहीं हुए | प्रत्येक वर्ष गंगा स्नान के लिए जाना और संत-समागम में भाग लेना उन्होंने अंत समय तक नहीं छोड़ा |

3. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि पुत्र की मृत्यु के बाद अब भगत अकेले रह गए थे | उन्होंने कभी किसी के आगे सहायता के लिए हाथ नही फैलाया । वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था | पतोहू को चिंता थी कि कौन उनकी देखभाल करेगा | कौन उन्हें खाना बनाकर खिलायेगा और कौन बीमारी में उन्हें दवा देगा |

4. गर्मियों की उमस भरी हुई शाम में गाँव के सभी लोग भगत के आँगन में इकट्ठे होने लगते | सभी अपना-अपना आसन जमा कर बैठ जाते | भगत पदों को गाते और सभी लोग अपनी खंजड़ी और करताल के साथ उसे जोर-जोर से गाते | ताल स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ श्रोताओं के मन भी ऊपर उठने लगते | मन तन पर हावी हो जाता और सारा आँगन संगीतमय हो जाता | इस प्रकार नाचते-गाते,भक्ति में लीन होकर वे गर्मी को भी भूल जाते |

5. मोह और प्रेम में अंतर होता है | मोह में व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है जबकि प्रेम में व्यक्ति के लिए अपने प्रेमी का हित-चिंतन ही सर्वोपरि होता है | इसे भगत के जीवन के आधार पर इस प्रकार समझा जा सकता है -

   i. भगत अपने बेटे से प्रेम करते थे मोह नहीं इसलिए उसकी मृत्यु पर वे मोही व्यक्ति के समान विलाप नहीं करते क्योंकि उनका पुत्र इस सांसारिक बंधन से मुक्त हो गया | उनके अनुसार यह प्रसन्नता का अवसर है |

   ii. अपने पुत्र के श्राद्ध की अवधि पूरी होने पर भगत पुत्रवधू के भाई को बुलाकर उसके पुनर्विवाह का आदेश देते हैं | यदि वे मोही होते तो बुढ़ापे में अपनी देखभाल के लिए वे अपनी पुत्रवधू को उसके भाई के साथ नहीं भेजते और न ही उसे

पुनर्विवाह का आदेश देते | यहाँ अपने प्रिय का हित-चिंतन उनके लिए सर्वोपरि हो था और यही उनके प्रेम की अंतहीन सीमा थी |

6. हमारी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे -

   i. कबीर गृहस्थ होते भी साधु थे,संभवतया भगत उनके जीवन से प्रभावित हुए होंगे |

   ii. कबीर आडम्बरों को नहीं मानते थे,भगत को उनका यह आदर्श रूप अच्छा लगा होगा|

   iii. कबीर के समान ही भगत भी खरा व्यवहार रखते थे |

   iv. कबीर किसी एक जाति विशेष का भला करना नहीं चाहते थे बल्कि वह तो सम्पूर्ण मानवता का कल्याण चाहते थे | भगत भी व्यक्ति विशेष को नहीं बल्कि मानवता को महत्व देते थे |